विस्कृति दिनयनं भिज्ञानं मार्षिलनन भिज्ञाद्विपद्भारमा उ कि विवेशीया मुना मार्था हणवं श्रीति मिष्ट्राय ॥ विश्वनिष्मिर्गिर्गिर्मिर्ग् रक्षेत्रिश्च अधिलीभा इक्षीभिक्ष्मनग भार्कः विमन्त्रकाशित्रभग्राम्बर्धाई थीय्रध्यद्वत ह्रभुक्तिनभ्गां मुके रिविभेनैक् अध्या महामी अदायी अविने से कर उने था मामा अइ दूर्मा भी ए विक्र अन्यार्थ थे सुधि भ द्राक्त ये करवें ॥ विनानार देनित्र सम्मकला भेग्ला एए कि चाउ थामा क क्लागरंगिक भंगस्य पर्वनां के क्रिय्य अवं मियान अद्युधिव निमन्पिउभाषी भूजाभन्मि भुजाभा रकाष्ट्रः थरभावयः भूलिकंकवीकरणहें जिसे ॥

50 यानिमर्रिशे पुरेशमाः जुंगाइग्वां नयनं सुउ श्वराल इ उ भी

विचालंगालक्वलं ज्याहरन भिरं ज्युभार ज्युभार भवानाष्ट्रायुक्तं मिठ्डभागमामा कं केले धम्मभेषाभी यार्थभारमीम्यानभक्तकाउत्नः निरुद्धाभाद्भभेराभा माज्ञ सुरा चम्रुं कि भक्षतमने सुने री उं नेभा भि छ मित्रभूल लिंड गर्ड राध्या उसु भन्न भनि उमित ापनुंधानियामामान कलम्भभाउधकुराभक मुमग्रानं इरातिभक्तमः विष्टार्डिवाभमयः ॥ नियम्बर्शिक्षिणिकि के कि कि कि कि कि कि कि कि वक्त्तीभी एन भनभुं इस्मिधिती उं उंभव्यां कि क यभागभा। अन्धला

विमिहिय जाय उहिश्विष्टिक भाम्मियी भक्त भाना मण न क्युनिक्नथर्मभिउभिधमधक्यभुकंमाध्येल याभाज्याम् सुरिक्शिल्यहाराभभानाभ भण्ना भागवान्यवेउयेन्वभ उवयन्भ चया भथ्भ जा ॥ । विमाउमायभाषां भेरणवनकं भव्यम्भ भण्नस्यभडें निर्देभचा मुला भरभडी ॥ या मीविर भाषी भिज्ञालयभाषी विद्यानिम् भाषी नित्तर्भणगीभमा लयकः विद्यापीम हारी निर्माभाषी पित्रप्री भारता प्राप्ती अन्तरी अल्पेन्पाउभाभा अनिम्न धरुष्ट्रपद्या रिकंग्भीम्भिग्ध्रहेन्भः॥

उउधुक्रभम्मिरिश्रिश्रीकि मेरसिरचनभृष्णेधावन ल्नीकि क्याण्यितिगर्वत्रम्यविष्ध्रद्वभ्रद्भिष्ठि उनिगरुथुए दि॥ छिउमा भक्त भध्यभा अभिक्ताथपु मण्डेक्डिकिरामिराधयुक्राम भलक्षिपम्कमन् इंबेष्टिभंक लीलायुकं ठगवेंडी उभरंग्नभाभि॥ चिगलमवपुक्सुउग्व उसकाचकाभाविउ भागविचावि इंग्ज्यभागालयालयुर मन्द्रज्यभामितिः धरिय उप्मिक्षिकिः क्यधवनभष्टण दिश्रम्भन्गरीयण्डनः ॥ हैं वी धर्म अभा

विनक्तीरका जिल्लाके वल कृति माभद्ररी भयति द्रष्ट किश्वभग्रहाश्विमक्रीक्च्चरक्निके क्रुउर्डिधमाम मस्रांगाउँ यक्षव ॥ ि मुंबंधल्लि थिउः धार्मा या द्वित्र भाष्ट्र मारं कर्टः ग्लुगड्युगिषिक्षम्लुमुद्रेयुग्ः नामानिरिप्र हविषान्य एट्ड गृष्टा निर्वे उट्ट हैं रवधितिम विसद्ध भृद्धः धर्डनभः॥

विश्वीलः भष्ठिम्यानाष्ठिरंभेग्याभप्रभिष्ट्रिः भष्र मिश्रमा उरित्र भक्त रेतायुग्याभर्म निकारिका प्रभाष अभक्तिका वेडी स्म अभिने मिड म्वीभ अक् भयुड ह वियापक्ष वृश्याह शवडीमीमाविष्ण थेरुनः॥ सुलधारमुषाष्ट्रद्वाधारमेगाम् मन् अक्रामाधारानाता माठीउँकथाना दूमा इंडिमा भर्षे म भर्म मिकिम मभाध्यकः मचीिकः भविवाविउपमंमियवाभामावि क्षान्त्रनः ॥

ि रक्षिम् मिवाधिभ यु रसनं उ भ्रात्म अक्षारं वहा मध्यनिकं डिसुन्तसभन्ने थक्ताभिष्ण अर्धुनान्। महिशा कियुगाचु इंग्रम कृष्ट्य इंग्लेन्से शिइंग्रेची भिर्मेश्व अणिडणम् अन्द्रकृषी दे नहीं श्रेट द्वर्मा मा पण्डे दिन्हा सामा अन्द्रकृषी दे नहीं श्रेट द्वर्मा स्वर् नी इन्सं के वस्ति वस्ति वस्ति वस्ति ।



वियापक्रं दुभनं रियुन्न धन्य । याद्यु इ अमिगांता यादं अङ्गा याध्य ग्लावश्य ही दि क्थाना दे मा नुर्देश अभक्ष्य भ्रम्भानं सिष्ठि सम्मान् हैं : स्वी दि: धरिक विद्यास सम्मानिक

थाउनः ॥ विज्ञेषियमाद्रीयदेशितमार्थमीद्रं मुस्य प्रदेश भन्गद्रथ नीउक्ष्णेयलयां यज्ञाश्चराविक्र्योभां मुलाद्रुशिगमण्य रंभरगलचेज लिशहः शुरं निर्देलिक्ड्येक्रमा लथरं उपरंत्रिनं इंग्हर्ण॥

GP

िर्णाचेरथित्रभर्जनेरिक्यभाष्टि निः मध्यामधएलिद्धिस्रग निमधार्य कृत्याणिय मिक्कएकाभभाष्ट्यणेकामधार्थे चभिमाश्वर्वययमीका । विश्वज्ञाविष्ठ्यणवारीनववि मूभारा यम्डिभिश्वतिश्वाभेडार किउवभक्त रिक्रिभारवक्वन उर्यभ्यारीणक्याप्रायणियक्मारीविनाधि॥ ियकार् इभाउवा कि किं सुर्वे लग्धायमान कुवनाभभाउ संग्रीक्षा उन्नद्धयिन्नभाउन न द्वनीयं द्वापिकः भ रचारिकानक्ष्यामा ॥ यः श्रातिकामयुलाधभक्त ण्डिक्ट्रेंक्ट्राम्भभूक्डकरंभगिम सुक्रूभी धमाभूनंम क्रमयठवडीभूथासे भाउः भविश्वकविङ किक्मन्त्वडी ॥

P

11

विश्वित्रह्म स्थान भूराय प्रत्यं नाग्य क्रायन्य क्षित्रकण्डमन्त्रामा भिक्रमक्ष्मामा भिक्रमित्री भिक्रमित्री भिक्रमित्र भिक्र अवक्रां निवकरी प्रयाचन अभाका नी द्यामा मार्था प्रयापि 'लिक्यिडिसामे शिक्षणाचडी मन् अ' निर्णिने पर' भित्रणाम्युरच्यक्षिक्षचमा अरच्यानम् अमाधराठगव जीभारवादुवासाविक ॥ रामाईकिएक अभिन्य मुरं चरा भिच्नाक्याक्षाक्षाक्षा नीनंग्हलबङ्गिकानिक्सीन ॥